Content

:: विषय-सूची ::

"राष्ट्रीय जागरण की पृष्ठभूमि में पं०सोहनलाल द्विवेदी का काव्य"

पृष्ठसंख्या

प्रथम अध्याय : "राष्ट्रीयता के विधायक तत्व और राष्ट्रीय जागरण की विविध भूमियाँ :" 16-76

(क) राष्ट्र और राष्ट्रीयता ।

(ख) राष्ट्रीयता के विधायक तत्व :-
भौगोलिक एकता- भाषागत एकता- ऐतिहासिक परंपरा एवं सांस्कृतिक एकता-जातिगत एकता-धर्मगत एकता - आर्थिक हितों की समानता-सामान्य प्रशासन ।

(ग) आधुनिक राष्ट्रीय चेतना के विविध पक्ष :-
ब्रिटिश सरकार की प्रशासकीय नीति-शिक्षा एवं साहित्य का प्रसारण-प्रेस एवं पत्रकारिता-ब्रिटिशों की रंगभेद एवं धर्मभेद नीति- १६ वीं शताब्दी का उत्तरार्द्धकालीन पुनरुत्थानवादी सांस्कृतिक पुनर्जागरण आंदोलन ।

द्वितीय अध्याय : "आधुनिक हिंदी काव्य में राष्ट्रीय जागरण की - विकासात्मक पृष्ठभूमि" 77-157

(क) भारतेन्दु युगीन राष्ट्रीय जागरण और हिंदी काव्य :-
जनवादी भावना-नारी विषयक उदात्त दृष्टिकोण-लोक काव्य-शैली का प्रयोग- यथार्थवादी दृष्टि ।

(ख) द्विवेदी युगीन राष्ट्रीय काव्यधारा :-
राष्ट्र के प्रति ममत्व का भाव-व्यापक राष्ट्रीयता की चेतना-भारतीय अतीत का गौरवगान-वर्तमान दुरवस्था के प्रति क्षोभ एवं सुधारवादी दृष्टिकोण ।

पृष्ठसंख्या

(ग) छायावाद युग :-

अतीत के प्रति गौरवगान-मातृभूमि के प्रति रागात्मक भाव-
समसामयिक राष्ट्रीय चेतना ।

(घ) छायावादोत्तर युग(स्वातंत्र्य प्राप्ति तक) :-

समसामयिक राष्ट्रीय चेतना-

°प्रधानतया राष्ट्रीय चेतना के कवि :

मैथिलीशरण गुप्त, रामनरेश त्रिपाठी, ठाकुर गोपाल-
शरण सिंह, पं० माखनलाल चतुर्वेदी, सियारामशरण
गुप्त, बालकृष्णशर्मा `नवीन`, सुभद्राकुमारी चौहान,
पं० हरिप्रसाद जी `वियोगीहरि`, श्यामनारायण पांडेय,
रामधारी सिंह दिनकर ।

(च) स्वातंत्र्योत्तर राष्ट्रीय काव्यधारा :

नव-निर्माणमूलक कविताएँ- भावात्मक एकता-राष्ट्रीय
सुरक्षा-शासनगत विकृतियों के प्रति विद्रोह तथा असंतोष।

तृतीय अध्याय : `व्यक्तित्व विश्लेषण एवं काव्यकार की राष्ट्रीयता - 158-202
विषयक अवधारणाएँ ।

o संक्षिप्त जीवनी :

जन्म एवं परिवार-विद्याध्ययन(राष्ट्रीय संस्कारों का-
बीजवपन काल) -सामाजिक जीवन तथा व्यवसाय-सार्वजनिक
सम्मान ।

o राष्ट्रीय आन्दोलन और सोहनलाल द्विवेदी(व्यक्तित्व पर
पड़नेवाले संस्कार) व्यक्तित्व के अन्य पक्ष :शरीर गठन
एवं स्वास्थ्य-वस्त्र परिधान-जीवन क्रम -

पृष्ठसंख्या

प्राकृतिक विशेषताएँ : स्वाभिमानी व्यक्तित्व-निर्भकिता-निस्पृही मनोवृत्ति-विनोदप्रिय एवं मस्तमौला-निर्लोभी एवं औदार्यपूर्ण व्यक्तित्व-साहजिकता, शिक्षा-प्रेमी एवं समाज-सेवक के रूप में-सम्पादक के रूप में-बाल-कवि के रूप में- भारतीय संस्कृति के उपासक-राष्ट्रीय जागरण के सैनानी ।

o काव्य-यात्रा के पड़ाव :
आरंभिक काल(१९२०-२१ से १९४० ई० तक)
विकासकाल(१९४१ से १९४६-४७ ई० पर्यन्त)
स्वातंत्र्योत्तर काल ।

o द्विवेदी जी की राष्ट्रीयता विषयक अवधारणाएँ ।

चतुर्थ अध्याय : "काव्यकृतियों का अध्ययन" 203-249

(१) भैरवी(२)वासवदत्ता(३)कुणाल(४)चित्रा(५)वासन्ती (६)प्रभाती (७) पूजागीत (८) युगाधार(९)विषपान (१०) सेवाग्राम(११)चेतना (१२) जय गांधी(१३)मुक्तिगंधा

बाल-साहित्य :(१) शिशुभारती(२)बाल भारती(३)दूध-बताशा(४) बांसुरी(५) हंसो-हंसाओ(६) नेहरू चाचा (७) दस कहानियाँ(पद्य में) (८) बच्चों के बापू(९)शिशुगीत (१०) हम बालवीर (११) हुआ सवेरा उठो उठो ।

संपादित कृतियाँ : (१) गांधी अभिनंदन ग्रंथ (२)गांधी शतदल (३) झण्डा ऊंचा रहे हमारा ।

निष्कर्ष ।

पृष्ठसंख्या

पंचम-अध्याय : "राष्ट्रीय आंदोलन की भूमिका में द्विवेदी जी का काव्य" 250-319

(क) राष्ट्रीय आंदोलन ।

(ख) आतंकवादी आंदोलन ।

(ग) काव्यगत संदर्भ और राष्ट्रीय आंदोलन :
मातृभूमि के प्रति श्रद्धा एवं प्रेम की भावना-अतीत के प्रति गौरव की भावना-वर्तमान स्थिति के प्रति संवेदना और देशवासियों का आह्वान-स्वतंत्रता सेनानियों के प्रति सम्मान का भाव-स्वतंत्रता आंदोलन के इतर संदर्भ (लक्ष्य-प्राप्ति की प्रेरणा)- जागरण के सन्दर्भ में कवि की अनुभूति- राष्ट्रीय आंदोलन के संदर्भ

(घ) स्वातंत्र्योत्तर कालीन युग-संदर्भ ।

षष्ठ-अध्याय : "काव्य में अंकित राष्ट्रीय सांस्कृतिक चेतना" 320-365

(१) आत्म संस्कार मूलक वैयक्तिक जीवन दृष्टि ।

(२) सामाजिक जीवन दृष्टि :
नैतिकता और जीवनगत उदात्तता -
समाज-सेवा का आदर्श ।

(३) जीवन मूल्य :
व्यक्तिगत जीवन-मूल्य- सामाजिक जीवन-मूल्य - राजनीतिक जीवन-मूल्य ।

सप्तम् अध्याय : "काव्य में प्रस्तुत सामाजिक और आर्थिक पक्ष" 366-402

(क) सामाजिक पक्ष ।

(ख) आर्थिक पक्ष :
- दलितों के प्रति संवेदना-
- ग्रामोत्थान :शरीरश्रम-विकेन्द्रित अर्थव्यवस्था
- निष्कर्ष ।

पृष्ठसंख्या

अष्टम्-अध्याय : 'राष्ट्रीय चेतना के विशेष संदर्भ में द्विवेदी जी का बाल- साहित्य' 404-430

- प्रकृतिपरक साहित्य ।
- नीति विषयक साहित्य ।
- जिज्ञासापरक साहित्य ।
- सर्व-साधारण विषयों से सम्बंधित साहित्य ।
- राष्ट्रीय-चेतना की जागृति एवं राष्ट्र-निर्माण परक साहित्य :-
  स्वर्णिम अतीत के प्रति गौरव भावना एवं मातृभूमि के प्रति प्रेम के गीत- राष्ट्र के प्रति कर्तव्य-कर्म की प्रेरणा के गीत- राष्ट्र की कल्याण-कामना के गीत- निष्कर्ष ।

नवम्-अध्याय : 'कला- सौष्ठव' 431-561

- कला विषयक कवि का निजी दृष्टिकोण ।
- भाषा एवं शब्द-संयोजना ।
- शब्द शक्ति का सौन्दर्य ।
- अलंकार विधान ।
- बिंब विधान ।
- प्रतीक विधान ।
- छन्द- योजना ।

उपसंहार 562-574

संदर्भ ग्रंथ सूची 575-583